सत्य एँव अर्थ पूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लैमेन इवैंजलिक्ल फैलोशिप, (LEF,Chennai)

मार्च-अप्रैल, 2006

मार्ग यही है।

'जब कभी दाहिने या बाए मुड़ने लगो तो तुम्हारे कान पीछे से यह वचन सुनेंगे, 'मार्ग यही है, इसी पर चलो।' यशायाह ३०:२१

क्या तुम्हारे विचार परमेश्वर के विचार बन गये हैं? पनीएल में की गई प्रार्थना के बाद, याकूब, परमेश्वर को अपने साथ लिए, अपने परिवार के पास लौटा। क्या परमेश्वर से तुम्हारी भेंट हुई? शिमशोन की माँ की भेंट, एक स्वर्गदूत से हुई। उसने अपने पति के पास आकर उसके बारे में बताया। तब उन दोनों के सोच विचार महान बनते गए।

जब हर रोज़ तुम और तुम्हारी पत्नी साथ मिलकर प्रार्थना करोगे तो एक दिन ऐसा आयेगा कि तुम सिर्फ परमेश्वर के विचारों में ही प्रार्थना करोगे। तुम को यह अनुभूति होगी की तुम परमेश्वर के विचारों के प्रवाह में बह रहे हो। यह कैसी आशिष है! जब तुम प्रार्थना करोगे, परमेश्वर की इच्छा की ही प्रार्थना करोगे। विद्रोह हमें परमेश्वर के विचारों से दूर खींच ले जाएगा।

दाऊद का पुत्र अबशालोम जो अति सुन्दर था, परमेश्वर के विचारों के स्तर तक कभी नही पहुँच पाया। इसलिए उस मे बहुत अहंकार भरा था। वह अपने ही प्रतिबिंम्ब को हर रोज आइने में देखता था। उसने कभी भी

पृष्ठ २ पर..मार्ग यही है..

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें

'परमेश्वर की चुनौती'

ETC TV कार्यक्रम

हर शनिवार सुबह ६:३० बजे

परमेश्वर के साथ सही बनो

'अहा! परमेश्वर का धन, बुद्धि और ज्ञान कितने अगाध हैं! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग अगम्य हैं। (रोमियों ११:३३)'

हम ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ सब कुछ उपरी और असहज हैं। इस में कोई सन्देह नही है। सब कुछ चमकीली पन्नी, दिखावे की सतह और चाँदी के रंग में, चमचमाती क्रोम की परत के समान है। कुछ विपत्ति या दुर्घटना घटती है तो, जो कुछ भी बचता है वह सिर्फ छोटे-छोटे टुकड़े है। और टेढ़ा-मेढ़ा लोहे का कंकाल, जो पहचान से परे है। मगर ज्यादातर लोग अपने संसारिक धन-सम्पत्ति की अल्पकालिक चमक-दमक के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा देते है।

दुर्भाग्यवश कई कलीसियाँओं को भी इस छिछिले ऊपरी दिखावे ने जकड़ लिया है। ऐसा मन-परिवर्तन जिस में पश्चाताप करने की जरूरत नहीं है - आज अधिकतर कलीसियाएं और प्रचारक लोग यही प्रचार कर रहे हैं। गहराई तक खोदना, अपने जीवन पर राज करनेवाले दुष्ट उद्देश्यों पर से परदा हटाना और छिपे हुए पापों के बारे में पश्चाताप करना, यह सब बुरा लगता है। यह ऐसी बात है जिससे मानवीय स्वभाव विरोध करता है। उघड़ने से और हृदय की गहराई तक जाँचे जाने से हम घृणा करते है। मगर प्रभु यीशु केवल यही करते हैं। जाँच-पड़ताल और रोग-निदान, इलाज करने के लिए आवश्यक है।

ऐसे रोग के लक्षण बताकर जो तुम में है ही नहीं, तुम अपने डॉक्टर को गुमराह करने की कोशिश कभी नही करोगे। तुम डॉक्टर को जहाँ तक हो सके, रोग के लक्षण का सही-सही विवरण देना चाहोगे, ताकि तुम्हारी समस्या क्या है, पता लगाने में डॉक्टर की मदद हो सके।

संत पौलुस पुकारते है, 'अहा! परमेश्वर का धन, बुद्धि और ज्ञान कितने अगाध है। उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम्य है।'

हाँ, मसीह में गहराइयाँ है। शुद्धता, सामर्थ्य और पूर्णता में भी गहराइयाँ है। जब हमारे चारों ओर मसीही लोगों के आज की परिस्थितियों को देखोगे तो, सिर्फ हमारी छिछली इच्छा ही नज़र आती है। प्रारम्भ में जो चेले थे, ऐसे व्यक्ति थे, जो किसी भी परिस्थिति का सामना कर सकते थे, इस गहरे आश्वासन से कि उनका प्रभु जो फिर से जी उठा है, वह उनका छुटकारा बार बार करेगा। यीशु उनके लिए पर्याप्त से ज्यादा था। उनका, ऐसा विश्वास था। एक मूर्तिपूजा करने वालों और अनैतिक समाज के बीच वे विजेताओं से बढ़कर थे।

मसीह आज भी पर्याप्त है। उनके वादे हमारे लिए काफ़ी है। मसीह में स्थित निधि और परमेश्वर के वचन की गहराइयों में जब तुम पहुँचते जाओगे, तो तुम्हारा हृदय एक नई आशा और एक नए अवलोकन से रोमांचित हो उठेगा। तुम सीधे उस खान कूप में पहुंचते हो। और चारों ओर स्पटिक में स्थित सोने की ठोस धारी में जूझती, वह केबल-कार तुम को गहराई और गहराई में ले जायेगी। वह सब तुम्हारा है। परमेश्वर तुम्हारा ज्ञान है। वह तुम्हारा उद्धार है। वह तुम्हारा पवित्रीकरण है। यीशु मसीह में यह सारे धन तुम्हारे लिए है। यहाँ तक कि उसने अपने अपको हमारे लिए दे दिया है। उसके पास ऐसा कुछ भी नहीं जिससे उसने, हमें वंचित

पृष्ठ २ पर..परमेश्वर के साथ सही बनो...

पृष्ठ १ से..परमेश्वर के साथ सही बनो..

रखा।

मेरे पिताजी बड़ी आध्यात्मिक गहराई वाले आदमी थे। और दूसरों में भी वह गहराई देखना चाहते थे। उनके जीवन काल में, हजारों लोगों को मन-परिवर्तन के गहरे अनुभव में लाने के लिए परमेश्वर ने उनको सामर्थ दी। उनमें से करीब-करीब सब लोगों ने प्रार्थना करना सीखा था। और हर रोज एकान्त में प्रार्थना करने की आदत डाली थी। इसमें कोई आश्चर्य की बात नही कि अस्वस्थ लोगों को चंगा करने में और अशुद्ध आत्माओं को बाहर निकालने में, परमेश्वर ने उन्हें महान रूप से उपयोग किया था। परमेश्वर का वचन उन सारी अन्धकार की शक्तियों के कामों के ऊपर प्रबल और विजयी रहा है।

दूसरी ओर, छिछले मसीही लोग अपनी बातों से पहचाने जाते है। परमेश्वर का गहराई से अनुगमन करने वाले जन के बारे में, वे बहुत ही हल्के तरीके से बाते करते है। लोगों के विवाद ने , स्वयं परमेश्वर के पुत्र को भी नही छोड़ा। उनको पियक्कड़, पापियों का मित्र और बालजबूल कहा गया। बढ़ई के पुत्र कहकर उसको तुच्छ जाना गया। मगर यीशु यरूशलेम की तरफ मुँह किए दृढ़ता से आगे बढ़े, जहाँ उनको दुःख झेलना था और क्रूस पर मरना था।

अब, उस पुराने कागज को फ़ाड दो। और उस पतली परत को खुरच कर निकाल दो, जिससे तुम अब तक अपने असली स्वभाव को छिपा रहे थे। सच्ची संतप्तता से क्रूस के पास आओ। एक नया जीवन पाने के लिए प्रभु यीशु को पुकारो। उसके प्यार और निधि में और भी गहराइयाँ है जिनकी तुम्हें खोज करनी है।

- जोशुआ दानिय्येल

पृष्ठ १ से..मार्ग यही है..

परमेश्वर के विचारों को पाना नही चाहा। वह विद्रोह से भरा था। मगर उसका पिता उससे प्यार करता था। वह एक गलत तरह का प्यार है। हत्या करके पश्चाताप न करने के बावजूद दाऊद ने उसे चूमा था। वह एक गलत चुम्बन था। परमेश्वर ऐसा नहीं करते। वह अपनी अच्छाई से तुम्हारा अनुगमन करते और तुमको पश्चाताप की ओर ले चलते हैं।

परमेश्वर ने पौलुस का मार्ग दर्शन किया और एक दिन उसे काबू कर लिया। वह तुम्हारे बड़े निकट है। जो तुम्हारी कल्पना में है और जिसे तुम पाना चाहते हो, परमेश्वर के पास वह पूरा करने का सारा सामर्थ्य है। दाऊद एक राजा का दामाद बनना चाहता था। मगर परमेश्वर ने उसको इससे बढ़कर राज्य ही दे दिया।

दानिय्येल के विचार उच्च विचार बनते गये। एक दिन उसने परमेश्वर के सानिध्य में प्रार्थना की, यह जानने के लिए कि वह परमेश्वर के प्रति सही है या नहीं। तब एक स्वर्गदूत ने आकर उससे कहा, 'तुम अति प्रिय हो।' वह प्रार्थना कर ही रहा था और उसका उत्तर मार्ग में था। मगर रास्ते में अन्धकार की शक्तियों ने उसका विरोध किया और जवाब आने में समय लगा।

तुम्हारे चारों ओर अन्धकार की शक्तियाँ है। मगर तुम उनके ऊपर विजय पाओगे। तुम्हारे हृदय में जो विद्रोह है, उसका मर मिटना जरूरी है। तब परमेश्वर के और तुम्हारे विचार एक समान हो जायेंगे।

इब्राहीम के साथ वैसा ही हुआ था। जब परमेश्वर ने उससे उसका पुत्र माँगा, उसमे कोई विरोध नहीं था। जब एक मानव हृदय उस स्तर पर पहुँचता है तब सारा स्वर्ग प्रसन्न हो उठाता है। परमेश्वर तुम्हारे परिवार की वजह से सारे संसार को आशिष देंगे। क्या तुम इस बात पर विश्वास करते हो?

क्या तुमको यकीन है कि परमेश्वर के अनुग्रह से तुम्हारे हृदय का सारा विद्रोह मिट जाता है। और परमेश्वर की सामर्थ्य तुम्हारे ज़रिये काम करके, सारी जगह परिवर्तन ला सकता है। क्या तुम जीत सके हो? क्या तुम्हारे हृदय से परमेश्वर के प्रति जो विरोध है वह निकल गया है? अगर परमेश्वर कहते है, 'इस तरफ जाओ', क्या तुम कहोगे, 'हाँ, मैं जाऊँगा।' अगर तुम्हारे हृदय का विद्रोह मर मिटता है, तुम परमेश्वर की वाणी को हर वक्त सुन पाओगे। वह अपने निर्देशन से तुम्हारा मार्ग दर्शन करता रहेगा।

लूधर ने मठों में अच्छा अनुशासन और अच्छी आदतें सीखी थी। उसने कुछ गलतियाँ जरूर की है। मगर यीशु मसीह के लहू में धोकर शुद्ध किया गया था। तब वह एक प्रेरित बने। कई महान आत्म-बलिदान किये। कलीसिया में स्थित पाप का खंडन करके अपनी जान को जोखिम में डाला था। हर एक क्षण मौत का सामना करता रहा। चाहे सारा संसार तुम्हारे विरुद्ध हो जाये, फिर भी तुम्हारा आध्यात्मिक साहस अनोखा होगा। संत पौलूस की तरह तुम भी कह पाओगे, 'मैं उसके (मसीह यीशु) के द्वारा सब कुछ कर सकता हूं, क्योंकि वह मुझे सामर्थ देता है।'

जब तुम्हारा नया जन्म होता है, परमेश्वर का यह लक्ष्य होता है कि तुम उसके प्रेरितों के जैसे बन जाओ। उसके लक्ष्य और उद्देश्य महान है। मगर तुम विचलित होकर मार्ग से भटक सकते हो। संसार तुम्हें लुभा रहा है। उन सारे संतों को याद करो जो संसार को दूर रखे थे। उसके महान बुलावे की ओर आगे बढ़ो।

- एन. दानिय्येल

For More Details Please contact on any of the following Addresses.

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532-2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
NOIDA(Delhi): Beautiful Books, Basement, Sharma Market, Atta, Sector-27, NOIDA, Uttar Pradesh Ph.09810776324.
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

जो सही है वही करो।

रॉब मॉऊ घर-घर में मशहूर नाम नही है, न ही जो उसने किया वह बड़ा कारनामा है। यह घटना तब घटी जब रॉब विटन अकादमी, विटन, इलीनॉए राज्य में १२ वी में पढ रहा था।

शानिवार की रात, विल्होब्रूक से हारने पर उसके फुटबॉल खिलाड़ी-जीवन का अंत हुआ। लेकिन एक क्षण के लिए भी यह मत सोचिए कि इसमें कोई खास बात नहीं है।

मंगलवार को, विटन क्रिसटियन, (जो अब अकादमी कहलाता है) मैदान में विटन 'वारियर' टीम 'वाबोन्सी वैली' से ३-२ से पराजित हुई। लेकिन आंकड़ों के बोर्ड और विटन अकादमी से उस इलाके में सबसे बढ़िया टीमों में गिने जाने के प्रयास के विषय में यह मनोरंजक कहानी है।

'वाबोन्सी' टीम ने खेल खत्म होने में १ मिनट पहले एक और गोल दाग कर बढ़त हाँसिल कर ली थी। बाकि १० सेकंड में बॉल 'मॉऊ' के पास मिड फील्ड में आ गई थी, वह बॉल को तेजी से ले गोल की ओर बढ़ा और गोल दाग दिया, मानो वह मैच बराबरी पर बिना विजेता छूट गया।

लेकिन निर्णय अभी पूरा नही हूआ था। क्योंकि मैदान मे एक ही रेफ्री था और खेल का समय बोर्ड पर दिखाया जा रहा था ताकि रेफ्री खेल पर ध्यान दे सके। जब मॉऊ गेंद लेकर गोल की ओर बढ़ रहा था तो सबकी आंखे उस पर लगी थी और समय घड़ी पर किसी की नज़र नही थी। घड़ी ने समय :०० दिखाया, लेकिन रेफ्री का ध्यान घड़ी पर नहीं था तो उसे लगा कि वह इस गोल को ना नहीं कर सकता और अंत में परिणाम ३-३ पर ठहरा।

'मैं खुद घड़ी पर निगाह रखे था क्योंकि मुझे अपने खिलाड़ियों को निर्देश देने की आदत है कि क्या करें; 'वाबोन्सी' के कोच एन्जलो डीबर्नार्डो ने कहा, 'हमें वह बड़ी आसानी से दिख रहा था, लेकिन सारी बात रेफ्री के देखने पर निर्भर करती है। हमारे खिलाड़ी रुक गए और उनके खिलाड़ी दौड़ते गए। वह हमारी ही गलती थी।'

डीबर्नार्डो इस घटना से झुंझलाया हुआ था लेकिन अंत में उसने इस निर्णय को स्वीकार करते विटन टीम के कोच 'वेस डस्क' को बधाई दी। शुरू में डस्क को लगा कि उसकी टीम ने मैच बराबरी पर ले आयी है क्योंकि उसका ध्यान भी मॉऊ पर लगा था घड़ी पर नहीं। लेकिन डस्क ने डीबर्नार्डो को जाकर बताया कि आखिरी गोल सचमुच समय खत्म होने के बाद हुआ था और वाबोन्सी टीम ही विजेता घोषित की जानी चाहिए।

जब डस्क ध्यान घड़ी की ओर था ही नहीं तो उसे कैसे पता चला कि गोल समय के बाद हुआ है?

'मॉऊ मेरे पास आया और बोला, 'जब मैंने गेंद को किक मारी तो घड़ी :०० पर थी।'' डस्क ने कहा, जो उसके सहायक कोच ने भी बताई। 'इतने सच्चे लोगों ने जब यह बात मुझे बताई तो मुझे ज़रा सा भी संदेह नही हुआ।'

बराबरी पर लाने वाला गोल करके, वो भी इलाके की जानी मानी टीम के विरोध में, मॉऊ बेहतरीन खिलाड़ी का खिताब पा सकता था। लेकिन यह बात पहले से ही सच थी। यह सच था कि मॉऊ उस गोल को सही मानने को तैयार नहीं था - जबकि ऐसा करना बड़ा आसान था - इससे मॉऊ की प्रसिध्दि और सम्मान बढ़े।

'पांच साल कि उम्र से मुझे सिखाया गया था कि जब तक रेफ्री सीटी न बजाए खेल मत रोको, मुझे इसलिए लगा कि अभी कुछ समय बचा है।' मॉऊ ने कहा। जब उसे बताया गया कि मैदान पर लगी घड़ी को ही समय का ध्यान रखने के लिए किया जा रहा है, उसने डस्क को जा कर बताया कि गोल होने से पहले समय पूरा हो चुका था।

'हमने जो सही है वही किया', मॉऊ बोला, 'यह गोल गिन कर मुझे बड़ी खुशी होती, लेकिन हार स्वीकार करना हमारी जिम्मेवारी थी।'

शायद मॉऊ के नाम के आगे ५५ गोल के साथ एक निशान लगाना चाहिए और लिखना चाहिए कि कैसे वह ५६ गोल हो सकते थे उसके स्कूल के खिलाड़ी इतिहास में।

एक और अंक सच्चे खिलाड़ी का चरित्र दर्शाने के लिए, विटन क्रिसटियन तथा रॉब मॉऊ को।

'इसलिए मैं भी परमेश्वर तथा मनुष्यों के समक्ष अपने विवेक को निर्दोष बनाए रखने का सदा प्रयास करता हूँ।' प्रेरितों के काम (२४:१६)

-चुना हुआ

मृत्युंजय खिस्त

स्रोत और साधन

एक सुबह मैं अपने दोस्त के साथ जनीवा शहर से बाहर गया था। हम वहाँ गये जहाँ एक झील का पानी बहुत तेजी से बहकर 'रोन' नदी में जा मिलते है। वहाँ का अजीब दृश्य हम दोनों के लिए दिलचस्पी का कारण बना है। और कई पर्यटक भी उस दृश्य से मुग्ध हुए। दो नदियों के पानी का यहाँ संगम होता है। वे 'रोन' नदी और 'आर्वी ' नदी है। आर्वी नदी 'रोन' में जा मिलती है। स्वच्छ और झिलमिलाते पानी के साथ 'रोन' बहुत सुन्दर दिखती है। 'आर्वी' का पानी चिकनी मिट्टी वाले प्रान्तों से बहकर भूरे रंग के कीचड़ भरी फीकी लगती है।

इतनी दूर साथ-साथ बहकर भी अपने साथी से कलुषित हुए बिना अपनी सतत गति में बहती उस नदी के बारे में जानकारी पाने के लिए, मैंने मान चित्र और परिदर्शिका देखी। दस से ग्यारह हजार फीट के बीच ऊँचाई पर स्थित एक हिम पर्वत, इस 'रोन' नदी का स्रोत है। यह ऐसे उतरती है मानो अनन्तकालीन रात के फाटक से बाहर निकल कर सूरज के स्तंभ के पैरों तले पहुँच कर बहती है। वह लगातार उस पिघलते हिम पर्वत से आपूर्ति पाती है जिसका अपना स्रोत शीतल हिम है। इतनी ऊँचाई पर से निकलकर, नियमित रूप से हिम पर्वत द्वारा ताजी होती हुई, स्विस ॲलफ्स की तेज ढाल से उतरकर, 'जनीवा' की झील से होती हुई और आगे बहती है। उसकी स्वच्छता का राज वहाँ है। और पास मे बहती एक गंदी पड़ोसी।

हमारे जीवन का स्रोत भी ऊपर, परमेश्वर के पर्वत पर होना चाहिए, जहाँ वह अविराम अपनी आपूर्ति पाता है। केवल इसी तरह पवित्रता प्राप्त होगी। साथ ही उस शुद्धता को बनाये रखने की गति। और आगे बढ़ते, दुनिया में लोगों के संपर्क में आते। लगातार यीशु की निकटता, सेवा की सदैव नई शुरुआत है।

- एस.डी.गॉर्डन

सत्य की परख!

'परमेश्वर का मार्ग तो सिद्ध है, यहोवा का वचन ताया हुआ है। जो उस में शरण लेते हैं, उन सब की वह ढाल है।' -भजन संहिता (१८:३०)

सूसन्ना वैस्ली

सुसन्ना एक बहुत बड़ी परिवार से है। शायद यह कहना एक न्युनोक्ति होगी। क्यों कि वह लंदन में स्थित एक पादरी की पचीस-वीं संतान थी। वह एक अकलमंद और गहरे रूप से आध्यात्मिक लड़की थी। सुसन्ना की हर रोज़ की प्रार्थना यह रहती थी, 'प्रिय प्रभु मेरी अगुवाई कर। आप की इच्छा पूरी करने में मेरी सहायता कर। और मेरा जीवन भी गिनने लायक बन जाय।'

सुसन्ना इस भय में जीती थी कि प्रचार करने की वजह से उसके पिता को कभी भी गिरफ्तार किया जा सकता है। वह मत विरोधी कलीसिया में एक प्रचारक थे। मत विरोधी कलीसिया ऐसे मसीहों का एक समूह थी जो अपने ही तरीके से प्रभु की आराधना करते थे। राजकीय गिरजाघर, चर्च ऑफ इग्लैण्ड द्वारा प्रस्तावित नियमों को वह नही मानते है। सन १६०० के अंत में चर्च ऑफ इग्लैण्ड के सिवाय किसी भी कलीसिया के लिए प्रचार करना कानून के विरुद्ध था। मत विरोधी बुरे समझे जाते थे, उनके कान काटे जाते और उनको जिन्दा जलाया जाता था। उस के पिता द्वारा प्रचार करने के कारण, एक बार एक सिपाही अनस्ले के घर आकर जुर्माने के तौर पर उस की संपत्ति में से कई चीजे उठा ले गया।

सुसन्ना अपनी पिता को बहुत प्यार और उनका आदर करती थी। वह हर रोज़ पढ़ाई और प्रार्थना एक ही समय पर उन्हीं से सीखी थी - ऐसी आदत जो एक दिन वह अपनी बच्चों को भी सिखाने वाली थी। सुसन्ना जब उन्नीस बरस की थी, सैम्यूल वेस्ली से उसकी शादी हुई। सैम्यूल केवल एक प्रतिबद्ध प्रचारक ही नही, बलकि वह बहुत ही प्रज्ञावान और उच्च शिक्षित भी था। वह लिखने का शौक भी रखता था। दुर्भायवश वह सुसन्ना के लिए व्यवहारिक आदमी नही था।

उनका पहला घर बहुत छोटा और कुछ खास नही था। लंदन के निकट, एक गाँव में स्थित एक छोटी सी कलीसिया में सैम्यूल पादरी का काम करते थे। जल्द ही उनको एक बेटा पैदा हुआ। अपने पिता के नाम पर उसका नाम भी सैम्यूल रखा गया। सुसन्ना यह प्रार्थना करती थी कि परमेश्वर उनके बेटे को और आने वाले बच्चों को, इस संसार में बदलाव लाने के लिए उपयोग करें।

कुछ सालों बाद, देहाती एक बड़ी कलीसिया में सैम्यूल को काम मिला था। वह लंदन से एक सौ मील की दूर पर था। बेहतर पगार और उनके लिए घर का इन्तजाम भी किया गया, फिर भी वहाँ जाना सुसन्ना को मुश्किल लगा। उन दिनों यातायत का साधन सिर्फ घोड़ा या टाँगा होता था, परिवार और दोस्तों से बिछड़कर एक सौ मील जाना, बहुत दूर लगता था। वह शायद उनको फिर कभी नहीं देख पायेगी।

सैम्युल ज्यादातर अपना खाली समय पत्रिका के लिए लेख और पद्य लिखने में बिताते थे। बढ़ते परिवार का खाना और कपड़ों की जरूरतों को पूरा करने की जिम्मेवारी सुसन्ना पर ही थी। सैम्यूल की कमियों के बावजूद सुसन्ना उन्हें प्यार करती थी।

वह बुलन्द विश्वास द्वारा कई कठिनाइयों से बाहर निकल आती थी। उसके पहले सात में से तीन बच्चे मर गये। उसका पहला बेटा कभी बोल नहीं पाया। इसके साथ-साथ सैम्यूल ने एक खास आदमी को नाराज किया था, यह कहकर कि जिस औरत के साथ वह रह रहा है वह उसकी पत्नी नही है, और वह जो, वह कर रहे हैं, पाप है। इसका मतलब यह था कि वह यकीनन अपना काम खो बैठेगा।

उन अन्धकारमय दिनों के दौरान, सहायता के लिए सुसन्ना हमेशा परमेश्वर की ओर देखती थी। उसके लिए आशा के किरण की भांति आखिर कार छोटा सैम्यूल बोलने लगा। उसने उसे पढ़ाने की शुरुआत की और यह पाया कि वह तेज दिमाग वाला है और आसानी से सब याद कर लेता है।

किसी दूसरे शहर में उसके पति को एक नौकरी दी गई। बेहतर वेतन के साथ-साथ एक बड़ा मकान और तीन एकड़ ज़मीन भी मिल रही थी। वे अब भोजन के लिए खुद फसल उगा सकते थे। मगर बदली करने के लिए खर्चा उठाना था और बढ़ते परिवार के लिए जरूरी साज सामाग्री, खेती-बाड़ी की शुरुआत करने के लिए आवश्यक औजार और पशु भी खरीदने की जरूरत थी। ये सब मिलाकर एक साल की कमाई के बराबर ऋण में पड़ गये।

उस नई जगह पर कलीसिया के अनपढ़ लोग वेस्ली के परिवार के साथ ताल-मेल नही रख पाये। और यह भी कि उनके पूर्वज प्रख्यात और प्रमुख थे। सैम्यूल के राजकीय विचारों और राजा के प्रति उसकी निष्ठा उन लोगों को पसन्द नहीं आयी। सान्त्वना के लिए सुसन्ना केवल परमेश्वर की ओर देखती थी।

एक बार जब सैम्यूल घर पर नहीं थे, एक उत्तजित - भीड़ चिल्लाते हुए और बन्दूक के धमाकों से सारे परिवार को जगाये रखा। क्योंकि, सुसन्ना एक बच्चा को जन्म देने के बाद चंगी हो रही थी, सड़क के उस पार एक नर्स उसके शिशु की देखभाल कर रही थी। आखिर में जब वह भीड़ चली गयी तो वह थकी नर्स गहरी नींद में बच्चे के ऊपर लुढ़की और बच्चे का दम घुट गया और बच्चा मर गया। कुछ समय बाद, कलीसिया के एक नाराज सदस्य ने सैम्यूल से तुरन्त पैसे वापस करने की माँग की जिसका वह देनदार था। सैम्यूल पैसे अदा नही कर पाये। इसलिए उस आदमी ने उसको तीन महीने कैद में डलवा दिया। जब वह घर पर नहीं था, किसी विरोधी ने आकर सारी गायों को मार डाला, जो सुसन्ना के भरण-पोषण का मुख्य आधार था। सैम्यूल के ऋण अदा करने में सुसन्ना के दोस्तों ने मदद की।

सन् १७०२ में आग के कारण उनके घर का दो तिहाई भाग नष्ट हो गया था। घर का पुनः निर्माण करने के लिए वे और ऋण में दब गये। सात साल बाद, लगभग उनकी सारी साम्पत्ति दुबारा आग में नष्ट हो गयी।

नियत रूप से पैसे की तंगी और उसके परिवार के प्रति लोगों का दबाव मानो काफी नही था, सुसन्ना के सात (७) और बच्चे मर गये। उनके उन्नीस बच्चों में से केवल नौ ही जीवित रहकर बालिग बने। इन सब से गुज़रते हुए भी सुसन्ना हर रोज छः घंटे बच्चों को पढ़ाने में बिताती थी। उसने यह निश्चय किया कि उसके बच्चे परमेश्वर और पड़ोसियों के प्रति अपना फर्ज़ निभाना सीखेगें, उसने तीन धार्मिक किताबों का लेखन किया। उसकी शिक्षा इतनी प्रभावशाली रही कि उनमें से, हर एक बड़ा हो कर धार्मिक जीवन में और गहन अध्ययन में रुचि रखे था। किसी भी तरह सुसन्ना हर रोज दो घंटे बाइबल पठन में और प्रार्थना में बिताती थी।

अंत में, सुसन्ना की शिक्षा, बच्चों के लिए हर रोज उसकी प्रार्थना और स्वयं अपना धार्मिक उदाहरण, उसके अपने संसार को बहुत प्रभावित किया है। जब उसके पुत्र जॉन और चार्ल्स कॉलेज में पढ़ाई कर रहे थे, परमेश्वर को जानने और उसकी सेवा करने में इच्छुक दूसरे विध्यार्थियों के साथ मिलकर एक क्लब का प्रारम्भ किया। यह दल आगे चलकर मेथोडिस्ट नाम से जाना जाता था, क्यों कि उसके प्रर्थना, उपवास और बाइबल पढ़ने के लिए नियमित समय रहता था।

बाद में, लाखों लोगों ने जॉन और चार्ल्स को सुना। इंग्लैंड में मथोडिस्ट संजीवन की जॉन ने अगुवाई की, जिस के कारण कई लोग फिर से सही सुसमाचार की तरफ फिरे है। इस सुसमाचार को अनगिनत, कलीसियाओं में चार्ल्स ने अपने गीतों के सहारे पहुँचाया था, जो उन्होंने स्वयं लिखे थे।

- चुना हुआ।

पृष्ठ ४

मृत्युंजय ख्रिस्त

घृणा के विष का इलाज

घृणा और कडुवाहट के लिए अति प्रभावशाली प्रत्यौषध, जिसकी मानव हृदय खोज कर सकता है, करुणा है। टूटे सबंध को जोड़के पुनः प्यार लाने के लिए यह एक रास्ता है।

टेनिसी, नैशविल में स्थित एक कॉलेज में 'बायरौन' बास्केट बाल के कोच थे। उनका पालन पोषण एक शराबी और दुर्व्यव्यवहारी पिता से (के साथ) हुआ था। बायरौन के दो भाई और तीन बहनों सहित एक बहुत बड़ा परिवार था। मगर उसके पिता घर की सारी कमाई दारू पीने में खर्च कर देता था। वह शराब पीकर, गुस्से में जोर जोर से चिल्लाता, गाली देता, धमकाता और मारता था। और बाद में उनको छोड़ कर चला जाता। जब बायरौन बारह वर्ष की आयु का था उसका पिता, परिवार को छोड़कर चला गया। उसने परिवार के भरण-पोषण के लिए बिलकुल कुछ नहीं किया था। बच्चों के संरक्षण के तौर पर कुछ बचत भी नही की थी। निर्वाह-धन भी नहीं। जन्म दिनों पर शुभ कामना करते कोई कार्ड नहीं। क्रिसमस पर तोहफे नही। कठिनाईयां और परित्याग के सिवाय कुछ नही था।

बायरौन के हाइस्कूल की पढ़ाई में स्नातक प्राप्त करने के दो हफ्तों बाद, छःह साल बाद उसके पिता दुबारा घर आये। वह एक अजीब-सी मुलाकात थी। वह लगभग आधा घंटा रहे और फिर से चले गए। और इस दफा सोलह साल तक कोई संम्पर्क नही था। बायरौन ने मुझ से कहा, 'अपने पिता के प्रति मेरी अभिवृत्ति वह सब कुछ थी जो एक मसीही के लिए अनुचित थी। एक खुशहाल बचपन से मुझे उन्होंने वंचित किया था। हर एक मोड़ पर मुझे निराश किया था। मुझे गाली देते थे। यह कहने से संकोच करता हूँ कि मैं उनसे घृणा करता था। शायद 'घृणा' शब्द कम पड़े। ऐसी कडुवाहट थी जो करीब नफरत के बराबर थी। जब कोई मेरे पिता के बारे में पूछते तो तुरन्त मैं उनकी बातों को टाल देता था। जैसे जैसे मैं बढ़ रहा था, मैंने इन सारी बातों को अपने दिमाग से निकाल दिया था। और वहाँ सिर्फ एक खाली स्थान मात्र रह गया था। मैं उनके बारे में सोचता नहीं था। अपने पिता को एक बार भी याद किये बिना मैं सालों साल बिता देता था।'

तब अनापेक्षित रूप से बायरौन की बुआ ने उसे फोन पर बुलाया और कहा, 'तुम्हारे पिता ब्रिस्टल, वर्जीनिया में है। वह बहुत बीमार है और मौत के करीब है। अगर उसके बच्चों में किसी एक को वह देख पाये तो, उसे कुछ अच्छा महसूस होगा। उन्हें (यकृत का सूत्रण रोग) लिवर-सिरहोसिस हुआ है।' दूसरे बच्चों में से कोई भी उनसे मिलना नहीं चाहता था। और बायरौन ही ब्रिस्टल के नजदीक रहता था। इसलिए वह अपनी कार में निकलकर वहाँ पहुँचा। उसने कहा, 'कई ख्याल मेरे दिमाग में थे। कोई खास भावना नहीं थी। मैं ऐसा करना नही चाहता था, मगर आभास हो रहा था कि मुझे ऐसा करना चाहिए।'

वह आई.सी.यु. में पहुंचा। वहाँ एक इकहत्तर वर्ष की आयु का एक बूढ़ा आदमी था। शरीर में कई नलियां लगीं थी। वह जांच यंत्रों से जुडे हुए थे और कई चिकित्सीय यंत्रों से घेरे हुए थे। बीते सोलह सालों में बायरौन ने उनको देखा नही था। मगर उसने उस व्यक्ति को पहचान लिया था। और कुछ अजीब सी भावना मन में उठी। जब बायरौन अपने पिता को, उन सारी तार, ट्यूब, जांच यंत्र और मशीनों से लगे असहाय पड़े, मरते देखा, तो बीते हुए सारे सालों की उसकी घृणा और क्रोध पिघल सा गया। वह उस ओर चलकर बिस्तर के पास खड़ा हुआ। उस आदमी ने आंखे खोलीं, बायरौन को देखा और रोने लग गया।

बायरौन ने कहा, 'मैं भी रोया, ऐसा लग रहा था मानो बरबाद हुए सालों के खेद में उसके मन में उठती पश्चाताप की लहरों को मैं देख रहा हूँ।' बायरौन ने वह दिन और अगला दिन भी अपने पिता के साथ गुजारा। उस आदमी के प्रति अपने मन में इतने सारे भाव उठते देख कर बायरौन को आश्चर्य हुआ। 'बिना पहचाने सालों से अपने ऊपर जो बोझ लिए था, दूर हो गया। हम एक दूसरे से बातें कर पाये और मैं उनके साथ सुसमाचार बाँट पाया।'

बायरौन के पिताजी बच गये और अस्पताल से बाहर निकल पाये। घर वापस आकर थोड़े समय जीये। उस दौरान बायरौन अपनी पत्नी और बेटियों को साथ लिए अपने पिताजी से दुबारा मिले। और उस समय बायरौन को पता चला कि उसके पिताजी ने विश्वास किया कि यीशु मसीह ही उनका प्रभु और उद्धारक है। और अपने पूरे हृदय से परमेश्वर की ओर फिरे।

उसके पश्चात यह खबर आई कि उनके पिताजी गुजर गये है। मगर अब बायरौन में वो कडुवाहट और अजनबीपन नहीं रहा। यीशु मसीह की करुणा ने उसको घेर लिया था। अपने आपको एक घृणा से भरे दूषित शिकार और हृदयहीन नहीं पाया। वह कुछ और ही देख रहा था। प्रभु की आखों के द्वारा अपने पिताजी को देखा था - एक ऐसा आदमी जिसको सिर्फ यीशु मसीह की जरूरत थी।

अपने पति या पत्नी को देखकर यह कहने कि बजाय 'वह मुझसे इस से अच्छा बरताव क्यों नही करता? वह ये क्यों नही करता? वह वो क्यों नही करता? मैंने ऐसे से क्यों शादी की? पति या पत्नी को देखकर यह कहो, 'परमेश्वर के स्वरूप में बना कोई है जो मुझे बिना समझे दुख पहुँचा रहा है। जितना वो जानता है उससे ज्यादा, जितना वो समझता है उससे ज्यादा। परमेश्वर कैसे मुझे उसे मदद करने में सहायता करेगा?'

-चुना हुआ।

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।